अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

प्रथम अध्याय में हमने देखा कि भूगोल शिक्षण का स्वरूप किस प्रकार का है, उसमें कौन–कौन सी सहायक सामग्री उपयोग में आती है, भूगोल विषय में मानचित्र का स्थान, उपयोगिता और उसके कौन–कौन से फायदे हैं इस बारे में बताया गया है।

इस अध्याय में हम संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन के बारे में जानेंगे। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकें, ज्ञानकोषों, पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्त्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पना, उद्देश्य, रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

इस शोध को आगे बढ़ाने के लिए निम्नांकित साहित्यों की सहायता ली गयी है।

- जर्नल्स
- किताबें
- दस्तावेज (विभिन्न शैक्षिक दस्तावेज)
- इनसाइक्लोपीडिया
- शैक्षिक सर्वे रिपोर्ट
- शोध सारांश, इत्यादि।

अनुसंधान प्रारंभ करने की प्रथम सीढ़ी साहित्य का पुनरावलोकन है। शोध से संबंधित पूर्व जानकारी हमें अपने कार्य को नया रूप व नये आयाम

देनें में मददगार साबित होती है। अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने हेतु व उद्देश्य से विचलित न होने के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। अतः इस शोध से संबंधित साहित्य का अवलोकन किया गया एवं मुख्य बातों को इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

2.2 संबंधित शोध कार्य

पौक्षे के अनुसार – "To enlist and analyse the concepts in geography cnpverins the syleelri for standards VII, VIII and XI of Secondary School in Maharashtra State and at to develop the methodology of teaching."

(1983, M.Phil., Pune University)

अध्ययन के उद्देश्य

1. महाराष्ट्र राज्य के कक्षा 7, 8 एवं 9 के भूगोल पाठ्यक्रम में भूगोल के संप्रत्ययों की पहचान करना।
2. भूगोल के पाठ्यक्रम में भूगोल के उपलब्ध संप्रत्ययों का विश्लेषण करना।
3. संकल्पना संबंधी विधि का विकास करना।

प्रतिदर्श

अध्ययन के लिए महाराष्ट राज्य के धुले जिले के 162 मराठी स्कूलों में से 20 स्कूलों का चयन यादाच्छिक स्तरीकरण प्रतिचयन विधि के द्वारा किया गया था। इन स्कूलों में से दस स्कूलों से 611 विद्यार्थियों का एक समूह बनाया और 661 विद्यार्थियों का दूसरे 10 स्कूलों में से चयन कर दूसरा समूह बनाया।

निष्कर्ष

दोनों समूहों में अंतर निकालने के लिए 'टी' टेस्ट का उपयोग किया गया। इन्होंने पाया कि भूगोल का पाठ्यक्रम संकल्पनाभिमुख नहीं है।

इन्होंने पाया कि ज्यादातर विद्यालयों में शिक्षण सहायक सामग्री, फिल्म, फिल्मस्ट्रीप, मॉडल, चित्रों तथा नमूनों का कोई उपयोग नहीं होता था। यदि होता भी था तो उनका उपयोग क्रमबद्ध तरीके से नहीं होता था।

* पाटिल –

"सोलापुर जिले के ग्रामीण स्कूल में भूगोल शिक्षण में आने वाली समस्याओं का अध्ययन" (1985 Ph.D. अमरावती विश्वविद्यालय)

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण माध्यमिक स्कूलों में भूगोल शिक्षक की उपलब्ध वर्तमान सुविधाओं का अध्ययन करना।
2. भूगोल शिक्षकों की व्यावसायिक तैयारी का अध्ययन करना।
3. भूगोल शिक्षण में अपनाई जाने वाली विधियों एवं तकनीकियों का अध्ययन करना।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

1. ग्रामीण स्कूलों में भूगोल कक्ष की सुविधा नहीं है।
2. अधिकतर शिक्षक व्याख्यान विधि से या परम्परागत् विधि से पढ़ाते हैं।
3. विद्यालयों में भूगोल संग्रहालय तथा पर्याप्त पुस्तकालय तथा शिक्षण सहायक सामग्री उपलब्ध नहीं है।
4. समय की कमी के कारण भौगोलिक उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पाती है ऐसा शिक्षक मानते हैं।

* भट्टाचार्य –

"Effectiveness of Various Models for Teaching Geography in relation to Institutional Research" (1993-94 M.Ed. Dessertation, RIE, Bhopal)

अध्ययन के उद्देश्य

1. संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान के द्वारा भूगोल शिक्षण की प्रभावशीलता का संस्थागत शोध के संबंध में पता लगाना।
2. संप्रत्यय संप्राप्ति में संस्थागत शोध के संबंध में तुलना करना।
3. शैक्षिक संस्थाओं के विभिन्न स्तरों के संसाधनों के अन्तःसंबंध प्रभाव का पता लगाना।

निष्कर्ष

1. जिन विद्यार्थियों को संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान के द्वारा पढ़ाया गया था उनकी उपलब्धि उन विद्यार्थियों की तुलना में अधिक थी, जिन्हें पारंपारिक शिक्षण तकनीकी से पढ़ाया गया था।
2. विद्यार्थियों के उस समूह में जिसे आगमन शिक्षण प्रतिमान के द्वारा पढ़ाया गया था उनकी भूगोल विषय में उपलब्धि पारंपारिक तकनीकी की तुलना में तथा संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान की तुलना में अधिक थी।
3. प्राकृतिक भूगोल में विद्यार्थियों की रूचि ज्यादा है, बजाय मानव भूगोल के।

इन्होंने भविष्य शोध के लिए सुझाव दिया कि शैक्षिक सामग्री का महत्व इस दिशा में भूगोल में शोध उपयुक्त साबित होगा।

* **जैनी –**

गुजरात के माध्यमिक विद्यालयों में भूगोल शिक्षण की स्थिति का अध्ययन (1987 Ph.D., गुजरात विश्वविद्यालय)

इसमें इन्होंने पाया कि –

1. 50 प्रतिशत विद्यालयों में भूगोल शिक्षक प्रशिक्षित नहीं हैं।
2. 50 प्रतिशत विद्यालयों में भूगोल पढ़ाने की सुविधाएँ कम हैं।
3. 42 प्रतिशत भूगोल शिक्षकों ने कोई रिर्फेशर कोर्स नहीं किया है।

4. लगभग 77 प्रतिशत शिक्षक भूगोल का शिक्षण व्याख्यान विधि के द्वारा कराते थे।
5. 33 प्रतिशत शिक्षकों में विषय से संबंधित कौशल की स्पष्टता नहीं पाई गई।

* **गुप्ता –**

"भौगोलिक शिक्षण साहित्य का विभिन्न आयु के बालकों में भौगोलिक संप्रत्यय को समझने की अवधारणा का अध्ययन" (1989–90, एम.एड. लघुशोध प्रबंध क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल)

निष्कर्ष

1. कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों के कुल 100 में से औसत 8.84 प्राप्त हुए हैं। विद्यार्थियों को 10 प्रतिशत प्राप्त हुए जिसकी तुलना में छात्राओं को 8.2 अंक प्राप्त हुए।
2. कक्षा 7वीं के विद्यार्थियों को कुल अंक 100 में से औसत 10.87 अंक प्राप्त हुए जिसमें छात्राओं का 9.90 प्रतिशत तथा छात्रों को 11. 82 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए।
3. कक्षा 8वीं के विद्यार्थियों को कुल अंक 100 में से औसत 3.76 प्राप्त हुए जिसमें छात्राओं को 11.27 प्रतिशत एवं छात्रों को 17.26 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए।

इन सभी विद्यार्थियों को री–एडमिनिस्ट्रेशन तथा नैदानिक उपचार अम्बाला में एक प्रायोगिक समूह पर किया गया तो यह ज्ञात हुआ कि कक्षा 6वीं तथा 8वीं के विद्यार्थियों का कार्य प्रदर्शन अच्छा नहीं है।

* **खान रफत –**

"कक्षा 9वीं में भूगोल विषय में छात्र–छात्राओं की न्यून शैक्षिक उपलब्धि के कारण एवं उनके निदानात्मक उपायों का अध्ययन" (1993–94 एम.एड. शोध प्रबंध क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल)

अध्ययन के उद्देश्य

1. कक्षा 9वीं में भूगोल में छात्र छात्राओं के न्यून शैक्षिक उपलब्धि के कारणों की जानकारी प्राप्त करना।
2. त्रुटियों के कारणों का पता लगाना एवं उनके द्वारा दी जाने वाली त्रुटियों को दूर करने के उपाय सुझाना।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

प्रतिदर्श

नगर की दो अन्य माध्यमिक शालाओं (एक बालक एवं एक बालिका) कक्षा 9वीं के 200 छात्र-छात्राएँ।

निष्कर्ष

D - 335

1. माध्यमिक स्तर पर भू-आकृति विज्ञान एवं मानचित्र अध्ययन में 35 प्रतिशत त्रुटि करते हैं।
2. भू-आकृति विज्ञान पृथ्वी की बाह्य शक्तियों द्वारा निर्मित भू-आकृतियों के ज्ञान में 43 प्रतिशत त्रुटि घाटियाँ, झीलों में अंतर के ज्ञान में 49 प्रतिशत त्रुटि करते हैं।
3. पृथ्वी की बाह्य शक्तियों के ज्ञान संबंधी परीक्षण में 50 प्रतिशत त्रुटि करते हैं।

* **शैलजा –**

"A Study of Geographical Concepts in Relation to Personality Factor and Teaching Aids" (1999-2000, M.Ed., Dessertation, RIE, Bhopal)

अध्ययन के उद्देश्य

1. केन्द्रीय विद्यालय और मिशनरी स्कूल के कक्षा 10 के छात्र-छात्राओं की भौगोलिक संप्रत्ययों की संप्राप्ति का अध्ययन करना।
2. दोनों स्कूलों में भूगोल शिक्षण में उपयोग की जाने वाली शिक्षण सहायक सामग्रियों का अध्ययन करना।

3. व्यक्तित्व के गुण और भौगोलिक संप्रत्ययों की संप्राप्ति के बीच संबंध का अध्ययन करना।
4. शिक्षण सहायक सामग्रियों के उपयोग और भौगोलिक संप्रत्ययों की संप्राप्ति के बीच संबंध का अध्ययन करना।
5. भौगोलिक संप्रत्ययों के उचित विकास के लिए सही सुझाव देना।

प्रतिदर्श

इस अध्ययन के लिए शोधकर्त्ता द्वारा कक्षा 10वीं के 110 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इनमें से 55 विद्यार्थी केन्द्रीय विद्यालय के और 55 विद्यार्थी मिशनरी स्कूल के थे।

निष्कर्ष

इन्होनें अपने अध्ययन में पाया कि केन्द्रीय विद्यालय के छात्र ज्यादा बुद्धिमान, अमूर्त चिंतनवाले, स्वतंत्र, क्रोधी तथा सामाजिक नियमों के प्रति बेपरवाह हैं तथा भौगोलिक संप्रत्ययों की संप्राप्ति में अच्छे हैं। मिशनरी स्कूलों के छात्र भावुकतापूर्ण सच का सामना करने वाले, शांत स्वभाव के पाये गये जो कि भौगोलिक संप्रत्ययों का संप्राप्ति में अच्छे पाये गये। केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक भूगोल के शिक्षण में सहायक सामग्रियों का उपयोग करते थे, उनमें मानचित्र, ग्लोब, चार्ट, एटलस, चित्र प्रमुख थे। मिशनरी स्कूल के विद्यार्थियों की भौगोलिक संप्रत्ययों की संप्राप्ति में उपलब्धि अच्छी थी, तथा केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों को भौगोलिक संप्रत्ययों की संप्राप्ति मिशनरी स्कूल के विद्यार्थियों की तुलना में कम थी।

अतः इस अध्ययन में पाया गया कि मिशनरी स्कूल के छात्रों को भौगोलिक संप्रत्ययों की संप्राप्ति केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों की तुलना में अधिक थी। इसका कारण मिशनरी स्कूल के शिक्षकों द्वारा शिक्षक सहायक सामग्रियों का उपयोग हो सकता है।

2.3 संबंधित साहित्य की समीक्षा के उपरांत कुछ मुख्य बिंदु निम्न प्रकार हैं :–

* पौक्षे (1983 एम.फिल., पूर्ण विश्वविद्यालय)

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि –

1. भूगोल का पाठ्यक्रम संकल्पनाभिमुख नहीं है। ज्यादातर विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक सहायक सामग्री और पुस्तकालय में भूगोल की पर्याप्त पुस्तकें नहीं थीं।
2. विद्यार्थियों का भूगोल की संकल्पनाओं को समझने के लिए किसी भी प्रकार के पारंपरिक भौगोलिक भ्रमण पर जाने की कोई व्यवस्था नहीं थी।

* पाटिल (1983, पीएच.डी., अमरावती विश्वविद्यालय)

इन्होंने अपने शोध में पाया कि :–

1. भूगोल स्कूलों में भूगोल कक्ष की सुविधा नहीं है और न ही कोई संग्रहालय है तथा पर्याप्त पुस्तकालय और शिक्षक सहायक सामग्री उपलब्ध नहीं है।
2. ज्यादातर शिक्षक भूगोल शिक्षण की पारंपरिक विधियों जैसे व्याख्यान, प्रश्नोत्तर विधि का उपयोग करते हैं।

* भट्टाचार्य (1984 एम.एड. शोध प्रबंध क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल)

इन्होंने अध्ययन में पाया कि :–

1. जिन विद्यार्थियों को संप्रत्यय संप्राप्ति के द्वारा पढ़ाया गया था उनकी उपलब्धि उन विद्यार्थियों की तुलना में काफी अच्छी थी जिन्हें पारंपरिक तकनीकी से पढ़ाया गया।
2. विद्यार्थियों के उस समूह को जिसे आगमन शिक्षण प्रतिमान द्वारा पढ़ाया गया था, उनकी भूगोल में उपलब्धि पारंपरिक शिक्षण तकनीकी की तुलना में तथा संप्रत्यय प्रतिमान की तुलना में अच्छी थी।

* **जैनी (1987 पीएच.डी., गुजरात विश्वविद्यालय)**

इन्होंने अपने शोध में पाया कि :–

1. 50 प्रतिशत शिक्षक भूगोल विषय के लिये योग्य नहीं हैं।
2. 52 प्रतिशत शिक्षक जो भूगोल पढ़ाते हैं उनके पास शिक्षा में स्नातक या इसके समकक्ष और कोई उपाधि नहीं है।
3. 77 प्रतिशत शिक्षक भूगोल का शिक्षण व्याख्यान विधि के द्वारा कराते थे, जिसमें वे किसी भी प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग नहीं करते हैं।

* **गुप्ता (1989–90 एम.एड. शोध प्रबंध क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल)**

इन्होंने अध्ययन में पाया कि :–

1. शिक्षण साहित्य का विभिन्न आयु के बालकों में भौगोलिक संप्रत्यय समझने में अच्छा उपयोग होता है।

* **खान रफत (1993–94 एम.एड. शोध प्रबंध क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल)**

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि :–

1. माध्यमिक स्तर पर भू–आकृति विज्ञान एवं मानचित्र अध्ययन में विद्यार्थी 35 प्रतिशत त्रुटि करते हैं।
2. पृथ्वी के बाह्य शक्तियों संबंधित ज्ञान परीक्षण में विद्यार्थी 50 प्रतिशत त्रुटि करते हैं।

* **शैलजा (1999–2000 एम.एड. शोध प्रबंध क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल)**

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि :–

1. केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक भूगोल में शिक्षण सामग्रियों का उपयोग नहीं करते।

2. मिशनरी स्कूलों के छात्रों को भूगोल सहायक सामग्रियों के उपयोग द्वारा पढ़ाया जाता है

3. मिशनरी स्कूलों के छात्रों की भौगोलिक संप्रत्ययो की संप्राप्ति केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों की तुलना में अच्छी थी।

इन सभी संबंधित साहित्यों से यह स्पष्ट होता है कि भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री की विद्यार्थियों के निष्पत्ति की दृष्टि से क्या भूमिका है। इस पर शोध कार्य होना आवश्यक है।